ध्येयIAS®

most trusted since 2003

इतिहास

(वैकल्पिक विषय)

प्राचीन भारतीय इतिहास (मौर्योत्तर काल)

द्वारा

विजय वेद सर

FACE TO FACE CENTRES

MUKHERJEE NAGAR (Head Office) :	A-12/13 ANSAL BUILDING, DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI - 110009, 9205274741/ 42/ 43/ 44
RAJENDRA NAGAR :	25B, SECOND FLOOR, PUSA ROAD NEW DELHI - 9205274743, 9205274745
LAKSHMI NAGAR :	1/53, 3RD FLOOR, LALITA PARK, LAXMI NAGAR, DELHI-92, 011-43012556, (+91)- 9311969232
RESIDENTIAL ACADEMY :	28/1A, KNOWLEDGE PARK III, GREATER NOIDA, UTTAR PRADESH - 201306, PHONE: 092053 36037/38/39
PRAYAGRAJ :	IIND & IIIRD FLOOR, SHRI RAM TOWER, 17C, SARDAR PATEL MARG, CIVIL LINES, ALLAHABAD PH.: 0532-2260189, 08853467068
LUCKNOW- ALIGANJ CENTRE :	A-12, SECTOR-J, ALIGANJ, LUCKNOW PH.: 0522-4025825, 09506256789
LUCKNOW- GOMTI NAGAR CENTRE:	CP-1, JEEWAN SHOPING COMPLEX, VIRAM KHAND-5, NEAR HUSARIYA CHAURAHA, GOMTI NAGAR, LUCKNOW -227106 PHONE: +91 7234000501, 7234000502
BHUBANESWAR :	OEU TOWER, THIRD FLOOR, KIIT ROAD, PATIA, BHUBANESWAR, ODISHA 751024, PH.: +91 9818244644, 7656949029

LIVE STREAMING CENTRES

Ahmedabad	9879113469/8000162499	Jodhpur	9529989199/9928965998
Aligarh	9837877879	Jalandhar	9888777887
Azamgarh	7617077051	Kanpur	7275613962
Bahraich	7275758422	Kurukshetra	8950728524
Bareilly	9917500098	Lucknow Alambagh	7518373333
Chandhigarh	8146199399/9050888338	Ludhiana	9876218943/9888178344
Faridabad	9711394350	Moradabad	9927622221
Gorakhpur	7080847474	Patiala	9041030070
Gwalior	9893481642	Patna	9334100961
Haldwani	8077728957/7060172525	Rewa	9926207755
Hisar	9996887708	Varanasi	7408098888
Jabalpur	8982082023		

"मौर्योत्तर काल"

(200 BC - 300 AD)

- राजनीतिक परिदृश्य
  - राज्यों/शासकों का अध्ययन
    - देशी राज्य
      - शुंग
      - सातवाहन
      - चेदिवंश (खारवेल)
    - विदेशी राज्य
      - इण्डोग्रीक
      - शक
      - कुषाण
      - पहलव
  - राजनीतिक प्रशासनिक विशेषताएं
- आर्थिक परिदृश्य
- समाज
- संस्कृति

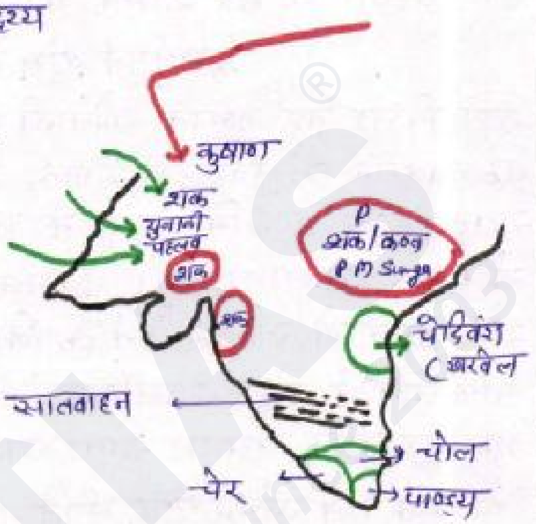

"मौर्योत्तर कालीन देशी राज्य"

शुंग वंश (पुष्यमित्र शुंग)

- सामान्य परिचय
- युद्ध एवं विजयें
- नीतियाँ/उपलब्धियाँ
  - राजनीति प्रशासन
  - धार्मिक नीतियाँ
  - सांस्कृतिक नीतियाँ

सामान्य परिचय-: 185 BC में अन्तिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या करके पुष्यमित्र शुंग ने शुंग वंश की स्थापना की इसने पाटलीपुत्र को प्रथम तथा विदिशा को दूसरी राजधानी बनाया तथा गंगा घाटी में कुछ समय के लिए एक मजबूत राज्य की स्थापना की।

युद्ध एवं विजयें-: पुष्यमित्र शुंग ने अनेक युद्ध किये तथा जीत हासिल किया उसने विदर्भ के शासक यज्ञसेन को पराजीत किया पतंजली के महाभाष्य से पता चलता है कि उसने यवनों को भी पराजीत किया पतंजली उसके गुरु थे इन [illegible] इन्होंने शुंगों के लिए दो अश्वमेध यज्ञ कराये थे।

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

176

राजनीति एवं प्रशासन -: पुष्यमित्र शुंग का शासक बनना भारतीय राजनीति में एक बड़ा परिवर्तन था अभी तक सैद्धान्तिक स्तर पर केवल क्षत्रिय ही शासक बनते थे लेकिन अब यहाँ से ब्रम्हणों के भी शासक बनने की परम्परा का प्रारम्भ हुआ

पुष्यमित्र शुंग ने कोई विशिष्ट पदवी धारण नही किया वह मुख्यत: सेनानी की पदवी धारण की है हालांकि वह व्यवहार मे निरंकुश शासक था ब्रम्हण साहित्य से पता चलता है कि पुष्यमित्र शुंग ने अपने साम्राज्य को कई हिस्सों मे बाट रखा था जिनपर युवराज (राजा का पुत्र) शासन करते थे उसे शासन मे सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद थी अनेक अधिकारी थे जो प्रशासनिक दायित्व निभाते थे ग्रामीण प्रशासन मुखीया द्वारा चलाया जाता था।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक नीति -: पुष्यमित्र शुंग ने ब्रम्हण धर्म की पुनर्स्थापना का काम किया अशोक के समय बन्द किये गए यज्ञ एवं बलि की प्रथाओं को पुन: प्रारम्भ किया गया उसने स्वयं दो अश्वमेध यज्ञ किये।

बौद्ध साहित्य में पुष्य मित्र शुंग बौद्धो का कट्टर विरोधी विहारो को नष्ट करने वाला तथा भिक्षुओं का हत्यारा कहकर चित्रित किया गया है लेकिन यह सत्य नही है यह सही है कि शुंगो ने पश्चिमोत्तर के कुछ बौद्धों को दण्डित किया था लेकिन इसका कारण धार्मिक नही बल्कि राजनीतिक था कुछ बौद्धो को राजद्रोह (यूनानियो की सहायता करने के कारण) के कारण दण्डित किया गया था साँची एवं भरहुत के स्तूपों के वेदिकाओं पर लिखे लेख से पता चलता है कि शुंगों ने साँची एवं भरहुत की कलाओं को संरक्षण प्रदान किया था अत: कहा जा सकता है कि ब्रम्हण होते हुए भी शुंगो का दृष्टिकोण उदार था।

ध्येयIAS
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

खारवेल (उड़ीसा · कलिंग)

चेदिवंश / महामेघ वाहन वंश

- सामान्य परिचय
- महान विजेता
- निर्माण कर्ता
- कला एवं संस्कृति का विकास करने वाला

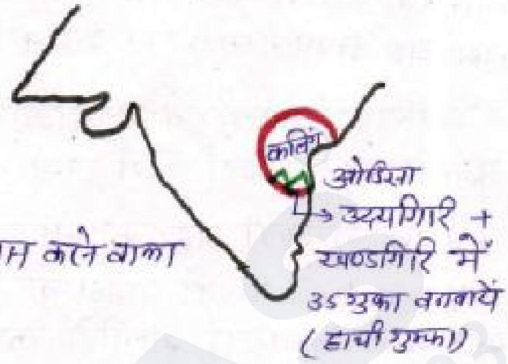

सामान्य परिचय -:

मौर्योत्तर काल में कलिंग मगध से स्वतंत्र हो गया उसने मगध के अधिपत्य को स्वीकार नही किया कलिंग में महामेघवाहन (चेदि वंश) की स्थापना हुई खारवेल इस वंश का तीसरा एवं महान शासक था।

खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेख से पता चलता है कि वह एक महान विजेता निर्माता कल्याणकारी शासक एवं कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने वाला शासक था

विजेता के रूप में खारवेल -: खारवेल ने अनेक युद्ध किये लगभग सभी युद्ध में उसने विजय हासिल किया हाथी गुम्फा अभिलेख से उसके विजय अभियान की वर्ष वार सूचना प्राप्त होती है जैसे -

- पश्चिम में अभियान कर उसने बरार (अहमदनगर एवं खानदेश महाराष्ट्र) के भोज को एवं राठिको को पराजीत किया सातवाहन शासक सातकर्णी को हराया।
- अपने राज्याभिषेक के 8वें वर्ष मे उत्तर की तरफ अभियान किया तथा मगध के शासक बृहस्पति मित्र को पराजीत किया मगध अभियान द्वारा वह उस जीन मूर्ति को उठा लाया जिसको बहुत पहले कभी मगध का शासक महापद्मनन्द ले गया था।
- अपने शासन के ग्यारहवें वर्ष में तमिल संघ के राज्यों (चोल चेर पाण्ड) को पराजीत किया तथा पिथुण्ड नगर की विजय की

हाथी गुम्फा अभिलेख में उल्लेखित विजय अभियानों के आधार पर कहा जा सकता है कि खारवेल के राज्य में वर्तमान उड़ीसा महाराष्ट्र तथा मगध के कुछ हिस्से शामिल थे तथा वह अपने समय का महान विजेता था।

महत्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियाँ - खारवेल ने कई लोक कल्याणकारी कार्य किये जैसे -

- उसने तुन्सली नहर को और चौड़ा एवं विस्तृत कराया तथा इसके जल को अपनी राजधानी कलिंग तक ले आया तूफान से ध्वस्त इमारतों प्राचीरों का पुनर्निमाण कराया अनेक कर माफ किये अकाल से राहत देने के लिए कदम उठाया जनता के कल्याण पर लगभग 1 लाख स्वर्ण मुद्राए खर्च किया कलिंग नगर का उसने जनसंख्या रजिस्टर कराया।
- खारवेल ने उदयगिरी तथा खण्डगिरी की पहाड़ियो पर अनेक गुफाओं का निर्माण कराया वह जैन धर्म का अनुयायी था अत: वह सभी गुफाओं को जैनियों को दान में दिया उदय गिरि खण्डगिरी की पहाड़ियों पर निर्मित ~~ये~~ गुफाए कला की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। कुल 35 गुफाओं में हाथी गुम्फा, रानी गुम्फा का० काकाश्रा गुम्फा एवं पातालपूरी गुफाएँ काफी कलात्मक है।
- खारवेल जैन धर्म का अनुयायी था लेकिन वह एक सहिष्णु शासक था उसने अन्य सम्प्रदायों को भी संरक्षण प्रदान किया
- खारवेल ने संस्कृत नृत्य नाटक जैसी कलाओं को भी बढ़ावा दिया हाथी गुम्फा अभिलेख के अनुसार शासक बनने के तीसरे वर्ष मे उसने संगीत नृत्य से संबन्धीत एक बड़ा महोत्सव आयोजित कराया था।

"आंध्र सातवाहन / आंध्र भृत 'ब्राह्मण वंशीय शासक'

(पूर्व में ये मौर्यों के अधिकारी थे)

- सिमुक (संस्थापक)
- शातकर्णी प्रथम
- गौतमीपुत्र सातकर्णी
- वाशिष्ठीपुत्र कुलवामी
- यज्ञ श्री सातकर्णी

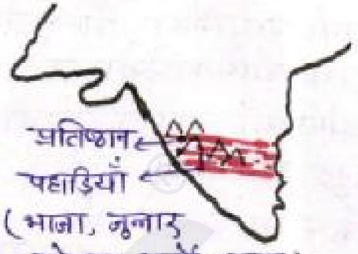

- अनेक युद्ध किये तथा विजय हासिल की।
- ब्राह्मण धर्म का विस्तार किया (बौद्धधर्म + कला को संरक्षण दिया)
- भूमिअनुदान देने वाला यह पहला शासक था।

सामान्य परिचय -: मौर्योत्तर कालीन देशी राज्यों में सातवाहनों का एक महत्वपूर्ण स्थान है सातवाहन मौर्यों के अधिकारी होते थे मौर्यों के पतन पर वर्तमान पश्चिमी तट से पूर्वी समुद्र तट के बीच दक्कन के एक बड़े हिस्से पर इन्होंने राज्य स्थापित किया।

सातवाहन ब्राह्मण वंशीय शासक थे इनमें सातकर्णी प्रथम गौतमीपुत्र शातकर्णी विशिष्ठी पुत्र कुलवामी तथा यज्ञ श्री ~~कुलवाम~~ शातकर्णी जैसे महत्वपूर्ण शासक हुए।

सातवाहन राजनीति एवं प्रशासन -: मौर्यों की भाँति सातवाहन राजनीति एवं प्रशासन का स्वरूप भी निरंकुश राजतंत्रात्मक था शासक प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी होता था सातवाहन शासकों ने राजत्व का महिमामण्डन किया तथा देवत्व का आरोपण करने की कोशिश की शासक को सहायता देने के लिए केन्द्र में एक मंत्रिपरिषद (अमात्य) जिसमें महासेनापति भण्डागारिक महाभोज आदि मंत्री काफी महत्वपूर्ण होते थे।

प्रशासन का बटवारा आगे प्रान्तों में किया गया था युवराजों को प्रान्तों में गवर्नर के रूप में नियुक्त किया जाता था प्रान्तों के नीचे अनेक जिले (आहार) होते थे सबसे नीचले स्तर ग्रामीण प्रशासन था। गौलमिक गावों में मुखिया को कहा जाता था।

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

सातवाहन प्रशासन की एक अनूठी विशेषता महिलाओं की भागीदारी थी नानाघाट अभिलेख से पता चलता है कि रानी नयनिका अल्प वयस्क शासक की संरक्षिका थी अनेक उच्च अधिकारियों की पत्नीयां उन्हीं के जैसी बड़ी बड़ी उपाधियाँ ग्रहण करती थी जैसे महासेनापत्नी महातलवारी एवं खुद सातवाहन शासक अपने नाम के साथ अपने माताओं के नाम जोड़ते थे।

सातवाहन समाज

सातवाहनकालीन समाज मुख्यत: वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित समाज था सातवाहन शासकों ने वर्णव्यवस्था के नियमों को लागू करने की कोशिश की लेकिन वर्ण नियमों को लेकर वे संकीर्ण / कठोर नहीं थे क्योंकि उन्होंने विदेशियों (शकों) से वैवाहिक संबंध स्थापित किये।

सातवाहन समाज मूलत: पितृसत्तात्मक था लेकिन समाज में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी सातवाहन महिलाएँ राजनीति एवं प्रशासन में भाग लेती थी उनके पास आय के साधन थे।

अर्थव्यवस्था

अर्थव्यवस्था अच्छी स्थिति में थी जैसे-

कृषि-: सातवाहन क्षेत्र में नदियों के डेल्टाओं एवं समुद्र तटीय क्षेत्रों में चावल की खेती की जाती थी काली मिट्टी वाले क्षेत्र में कपास की खेती होती थी जबकि पहाड़ी की ढलानों पर मसालों की खेती होती थी पठारीय एवं वृष्टिछाया प्रदेश होने के कारण हर स्थान पर खेती की सीमाएं थी अत: वे व्यापार वाणिज्य पर भी बल देते थे।

शिल्प उत्पादन-: सूती वस्त्र लकड़ी की विभिन्न कलाकृतियों एवं इत्र माला ~~तथा~~ निर्माण तथा लोहा उद्योग की जानकारी साहित्य में प्राप्त होती है सातवाहनों के यहाँ लोहा उद्योग एक प्रमुख उद्योग था करीमनगर तथा वारंगल (आन्ध्रप्रदेश) के उत्खनन से लोहार के भट्ठियों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

सातवाहन राज्य में श्रेणियों को काफी स्वायत्तता प्राप्त थी श्रेणियां उत्पादन, व्यापार वाणिज्य बैंकिंग आदि कार्यों को काफी लचीले ढंग से करती थी।

व्यापार -: आन्तरिक एवं वाह्य दोनों प्रकार के व्यापार अच्छी स्थिति में था उत्तर एवं दक्षिण के बीच आन्तरिक व्यापार में सातवाहन मध्यवर्ती भूमिका निभाते थे रोम के साथ विदेशी व्यापार को सातवाहन शासकों ने काफी बढ़ावा दिया पेरीप्लस आफ एरीथ्रियन सी में सातवाहनों का रोम के साथ व्यापार तथा आयात-निर्यात की सूची प्राप्त होती है।

मौद्रिक एवं वित्तीय स्थिति -: सातवाहनों ने अनेक प्रकार के सिक्के जारी किये उन्होंने सीसे के सिक्के सर्वाधिक मात्रा में चलाए इससे अर्थव्यवस्था के मौद्रीकरण को बल मिला सातवाहन क्षेत्रों में महाजनों एवं साहुकारों की श्रेणियां वित्तीय लेन देन एवं ऋण सम्बन्धी कार्यों में संलग्न थी। अभिलेखों में श्रेणी द्वारा 9% एवं 12% की ब्याज दर से ऋण दिये जाने की चर्चा मिलती है वित्तीय बाजार के क्रियाशीलता के कारण व्यापार वाणिज्य को काफी बढ़ावा मिला

नगरीकरण -: सातवाहन क्षेत्र में नगरीकरण को बढ़ावा मिला प्रतिष्ठान धान्य कटक अमरावती नागार्जुनकोण्डा आदि अनेक नगरो का इस समय उद्भव हुआ।

संस्कृति

सातवाहनकालीन संस्कृति -: सातवाहनों के समय संस्कृति के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण विकास हुआ ब्रह्मण बौद्ध जैन आदि सभी धर्मों का विकास हुआ सातवाहनो ने ब्रह्मण तथा बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया

सातवाहनों के संरक्षण में स्थापत्यकला (चैत्य विहार स्तूप) चित्रकला (अजन्ता की चित्रकारी) तथा मूर्तिकला (अमरावती नागार्जुनकोण्डा) का काफी बेहतर विकास हुआ पश्चिमी घाट की पहाड़ियों जैसे भाजा जुन्नार नासिक कार्ले अजन्ता आदि में एक से बढ़कर एक कलाकृतियों का निर्माण हुआ।

सातवाहन शासकों शिक्षा एवं साहित्य को भी बढ़ावा दिया इस समय बौद्धो द्वारा मठो में तथा ब्राह्मणो द्वारा घटिकाओं (हिंदू शिक्षा केंद्र) में शिक्षा दी जाती थी सातवाहनो के समय प्राकृत भाषा का काफी विकास हुआ सातवाहन शासक हाल द्वारा प्राकृत में "गाथासप्तसती" की रचना की गयी इसीसमय गुणाढ्य ने "बृहदकथा" सर्ववर्मन ने 'कातंत्र' की रचना की।

" मौर्योत्तर कालीन विदेशी राज्य "

'हिन्द यूनानी'

- सामान्य परिचय
  - सिक्कों से 30 शासकों की जानकारी
    - डेमेट्रियस
    - मेनाण्डर
    - (imp)
- प्रभाव
  - राजनीतिक
  - आर्थिक
  - सांस्कृतिक

सामान्य परिचय -: हिन्द यूनानी बैक्ट्रिया में शासन करते थे अशोक के कमजोर उत्तराधिकारियों के दौरान में इन्होंने भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित कर लिया गांधार, तक्षशिला स्यालकोट स्वातघाटी आदि क्षेत्रों मे यूनानी राज्य स्थापित हुआ।

सिक्को से लगभग 30 हिन्द यूनानी शासकों की सूचना मिलती है जिसमें युथीडेमस डेमेट्रियस मेनाण्डर आदि प्रमुख थे भारत मे यूनानियो की सत्ता बहुत अधिक दिनों तक नहीं बनी रह सकी फिर भी उनके आगमन से अनेक महत्वपूर्ण प्रभाव उत्पन्न हुए।

भारत पर हिन्द यूनानी प्रभाव -: "आर्थिक प्रभाव"

यूनानियों के आने से नगरीकरण को बढ़ावा मिला गांधार तक्षशिला पेशावर आदि में इन्होंने यूनानी रोमन पैटर्न पर नगरों का निर्माण किया।

हिन्द यूनानियों ने सोना चाँदी ताँबा आदि धातुओं के सिक्के जारी किए वे पहले शासक थे जिन्होंने सोने का सिक्का जारी किया उनके सिक्के काफी कलात्मक तथा साँचे में ढालकर बने होते थे विविध प्रकार के सिक्को के प्रचलन से अर्थव्यवस्था को के मौद्रीकरण को काफी बढ़ावा मिला -

हिन्द यूनानियों के आगमन के कारण भारत रोम व्यापार को बढ़ावा मिला विशेषतः पश्चिमोत्तर में रेशम मार्ग के द्वारा भारत रोम स्थलीय व्यापार को इन्होंने बढ़ावा दिया।

" राजनीतिक प्रभाव "

राजनीति एवं प्रशासन पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा अपने विजीत क्षेत्रों में उन्होने सैन्य गवर्नरों को क्षत्रप के रूप में नियुक्त किया बाद में कुषाणों ने भी इस प्रणाली को लागू किया यूनानी अभियांत्रिकी एवं युद्ध व्यूहरचना में काफी कुशल एवं दक्ष थे भारतीयों ने उनसे युद्ध तकनीकी एवं सैन्य संचालन के अनेक गुण सिखे।

" सांस्कृतिक प्रभाव "

भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा संस्कृत भाषा के कई शब्द जैसे कलम पुस्तक सुरंग खलीन (घोड़े की लगाम) आदि यूनानी भाषा से लिये गये हैं यूनानीयों ने भी सेना एवं सेनापति जैसे शब्दो को अपनी भाषा में शामिल किया

यूनानी ज्योतिष विद्या के काफी जानकार होते थे भारत में प्रचलीत पाँच(5) सिद्दान्तों में से दो (2) रोमक एवं पोलिश सिद्दान्त यूनानीयों की ही देन है। नक्षत्रों को देखकर राशि (भविष्य) बताने की कला भारतीयो ने युनानीयों से ही सिखी।

यूनान में नाट्य मंच कला काफी संमृद्ध थी यूनानीयों के भारत आने से भारतीय नाटकों में पर्दा (यवनिका) का प्रचलन प्रारम्भ हुआ।

यूनान एवं रोम मूर्तिनिर्माण कला में भी एक महत्वपूर्ण देश/स्थान था यूनानीयों के आने से भारत में मुर्तिकला काफी समृद्द हुई उन्होने गांधार कला को संरक्षण दिया जिसके तहद बुद्द बोधिसत्व की अनेक प्रतिमाए यूनानी रोमन प्रभाव के तहद बनायी गयी।

अनेक युनानियो ने भारत के धर्म को स्वीकार किया जैसे मेनाण्डर द्वारा बौद्द धर्म स्वीकार किया गया इसीप्रकार हेलियोडोरस ने भागवत धर्म / वैष्णो को स्वीकार किया भारतीय धर्म एवं संस्कृति को स्वीकार करके वे विदेशी नही रहगये बल्कि उनका भारतीयकरण हो गया।

"कुषाण"

[भारत में सबसे बड़ा राज्य कायम किया (कनिष्क प्रथम ने)]

"मंगोलिया - यू-ची नामक कबिलाई समूह की 5 शाखाएँ थी इन्ही में से एक कुषाण थे"

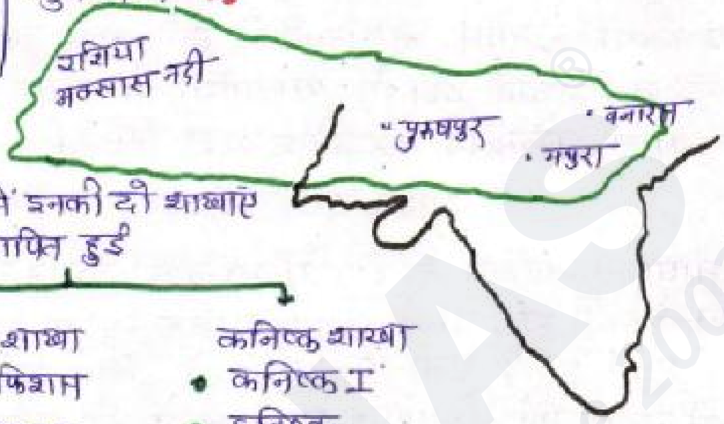

भारत में इनकी दो शाखाएं स्थापित हुई

कैडफिसस शाखा
- कुजुल कैडफिसस
- वीम कैडफिसस

कनिष्क शाखा
- कनिष्क I
- हुविष्क
- वाशिष्क
- वासुदेव

कनिष्क एवं उसकी उपलब्धियाँ

सभी कुषाण शासकों में कनिष्क प्रथम सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक था उसने ऑक्सस (रूस) नदी से लेकर गंगा के तट (बनारस तक) एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की मथुरा एवं पेशावर उसकी दो राजधानियाँ थी जहाँ से इतने बड़े साम्राज्य पर नियंत्रण किया जाता था अनेक साकारात्मक नीतियों एवं उदार दृष्टिकोण के कारण कनिष्क को काफी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

युद्ध एवं विजयें

कनिष्क ने अनेक क्षेत्रों की विजय की राजतरंगीणी के अनुसार उसने कश्मीर विजय किया तथा वहाँ कनिष्कपुर नामक नगर की स्थापना की पर्शिया के शासक ने कनिष्क पर आक्रमण किया था लेकिन कनिष्क ने उसे बुरी तरह पराजीत कर दिया उसने चीन पर दो बार आक्रमण किया तथा चीन के काशगर यारकंद खोतान आदि स्थानों (जहाँ से रेशम मार्ग गुजरता था) पर नियंत्रण स्थापित किया गंगाघाटी में साकेत एवं मगध के शासकों को उसने पराजीत किया मगध विजय के

बाद महान बौद्ध विद्वान अश्वघोष (अश्वघोष) को वह अपने साथ ले आया था।

"कनिष्क का प्रशासन"

कनिष्क का प्रशासन राजतंत्रात्मक ढाँचे पर आधारित था लेकिन उसका प्रशासन अतिकेन्द्रीकृत नहीं था बल्कि विकेन्द्रीकृत था उसकी दो राजधानियाँ थी।

कनिष्क ने अपने साम्राज्य को क्षत्रप प्रणाली के आधार पर बटवारा किया था उसके समय मथुरा में खरपल्लान तथा बनारस में वनस्पर नामक क्षत्रपो (गवर्नरों) की चर्चा मिलती है

कुषाणो के अधीन अनेक छोटे छोटे सामन्त भी होते थे प्रशासन चलाने में कुषाण इनका सहयोग लेते थे अतः कुषाणो का प्रशासन राजतंत्रात्मक एवं सामंती विशेषताओं से युक्त था चीनियों के भाँति उन्होने राजत्व में देवत्व का आरोपण किया देवपुत्र तथा महाधि महाराजाधिराज की उपाधियाँ धारण की खुद की तुलना देवताओं से की -

"धार्मिक नीति"

कनिष्क एक सहिष्णु शासक था उसने महायान बौद्ध धर्म स्वीकार किया था लेकिन अन्य धर्मों के प्रति वह उदार था उसके सिक्को पर यूनानी ईरानी हिन्दू देवताओं तथा बुद्ध के अंकन मिलते है उसने बौद्ध धर्म तथा संस्कृत साहित्य को संरक्षण प्रदान किया उसके संरक्षण में कश्मीर में चौथी बौद्ध समिति आयोजित हुई मध्यएशिया तिब्बत चीन आदि देशों में उसने बौद्ध धर्म का काफी प्रचार किया।

सांस्कृतिक योगदान

- कनिष्क ने कला तथा साहित्य को भी बढ़ावा दिया तक्षशिला पेशावर गांधार मोहनजोदड़ो आदि में उसने अनेक स्तूपों एवं विहारों का निर्माण कराया उसने गांधार एवं मथुरा कला को संरक्षण दिया जिसके तहत बुद्ध बोधिस्त्व जैन हिन्दू देवी देवताओं यक्ष यक्षणियों लोकपरम्परा के तत्वों तथा ... की अनेक सुन्दर एवं कलात्मक प्रतिमाएँ

बनायी गयी।

- कनिष्क साहित्य प्रेमी तथा विद्वानों का आश्रयदाता शासक था उसने अपने दरबार में अश्वघोष वसुमित्र नागार्जुन चरक पार्श्व आदि विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया।
- कनिष्क ने भारतीय समाज एवं संस्कृति के रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं को स्वीकार किया एवं पूर्णरूपेण भारतीय हो गया। भारत में उसने कई मध्य एशियाई परम्पराओं जैसे लम्बा कोट चूड़ीदार पजामा पगड़ी कुर्ती आदि का प्रचलन किया।

"आर्थिक योगदान"

कनिष्क ने व्यापार वाणिज्य तथा नगरीकरण को बढ़ावा दिया उसके समय तक्षशिला तथा पेशावर में हड़प्पाइयों जैसे शतरंजनुमा पैटर्न पर नगरीकरण किये गये भवनों में लाल टाइल्स चूना एवं सुर्खी का इस्तेमाल किया गया।

उसने सोने चाँदी तथा ताँबे के अनेक सिक्के जारी किये प्राचीन भारत में सर्वाधिक मात्रा में ताँबे के सिक्के कुषाणों ने ही जारी किये इससे अर्थव्यवस्था के मौद्रीकरण को काफी बढ़ावा मिला उसने श्रेणियों को काफी स्वायत्तता प्रदान किया इससे उत्पादन व्यापार वाणिज्य को काफी बढ़ावा मिला वह रेशम मार्ग पर सीधा नियंत्रण रखता था जिससे उसे काफी चुंगी प्राप्त होती थी भारत रोम व्यापार को उसने विशेष बढ़ावा दिया फलतः आर्थिक समृद्धी को बल मिला

मौर्योत्तर कालीन राजनीतिक प्रशासनिक विशेषताएँ

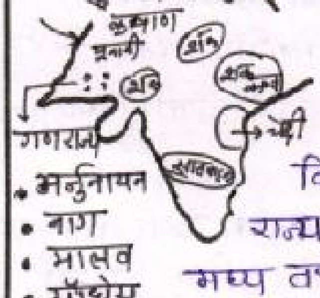

गणराज्य
- अर्जुनायन
- नाग
- मालव
- यौधेय

मौर्योत्तर काल में अनेक छोटे-छोटे राज्यों की स्थापना हुई जिनमे अनेक देशी तथा विदेशी शक्तियाँ शामिल थे इस काल के अधिकांश राज्य राजतंत्रात्मक ढाँचे में कार्यरत थे लेकिन मध्य तथा पश्चिमोत्तर भारत में अनेक छोटे-2 गणराज्य जैसे अर्जुनायन आर्जुन नाग यौधेय मालव आदि गणराज्य भी थे जहाँ का शासन गणतंत्रीक ढंग से चलता था।

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

"राजनीतिक प्रशासनिक"

मौर्योत्तर कालीन राजनीतिक प्रशासनिक विशेषताए निम्न थी –

निरंकुश राजतंत्र पर आधारित राजनीति –: मौर्योत्तर कालीन अधिकांश राज्य निरंकुश राज्य थे जहाँ राज्यतंत्रात्मक ढाँचे में प्रशासन चलाया जाता था इसके तहत शासक एक निश्चित क्षेत्र पर केंद्रीय मंत्रियों एवं अधिकारियों प्रान्तीय एवं स्थानीय अधिकारियों आदि के माध्यम से शासन चलाता था।

शासन में संयुक्त प्रणाली के साक्ष्य –: इसकाल मे सिद्धान्तत: प्रशासनिक रूप से शासक सर्वोच्च थे लेकिन उनके द्वारा शासन में राज परिवार के व्यक्तियों जैसे युवराजों महिलाओं तथा अधिनस्तों तथा सामन्तों को शासन में भागीदार बनाते थे कुषाणों मे अनेक सामन्तों सातवाहनों मे रानीयों तथा शुंगो मे युवराजों के शासन में भागीदारी के साक्ष्य मिलते है।

राजत्व में देवत्व का आरोपण –: इसकाल के पूर्व के शासक राजत्व मे देवत्व का आरोपण करने में विश्वास नहीकरते थे लेकिन इस काल मे यह प्रवृति दिखाई देती है कुषाणो चीनियों की भाँति देवपुत्र की उपाधी ग्रहण की इसी प्रकार सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी ने अपने अभिलेखों में अपनी तुलना राम अर्जुन तथा भीम से किया है।

राजनीति में सामंती लक्षण –: मौर्योत्तर कालीन राजनीति एवं प्रशासन में कही सामंती लक्षण भी विद्मान थे शकों एवं कुषाणो ने महाराजाधिराज, राजाधिराज, षाहानुषाही जैसी उपाधियाँ ग्रहण की थी इससे ऐसा लगता है कि उनके अधिन अनेक सामन्त थे इसी काल में सातवाहनों द्वारा पहली बार भूमि अनुदान दियागया अनुदान के साथ साथ भूमि प्राप्त कर्ता को राजस्व वसूली एवं प्रशासनिक अधिकार भी प्रदान किये गये इससे सुदूर क्षेत्रों में सामंतीकरण को बढावा मिला।

गणराज्यों की उपस्थिति -: मौर्योत्तर काल में राजतंत्रों के साथ साथ वर्तमान पंजाब, मध्यप्रदेश, तथा राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में मालव यौधेय शिवि नाग अर्जुनायन आदि अनेक गणराज्य भी थे यहाँ गणतांत्रिक पद्धति द्वारा शासन चलाया जाता था ये गणराज्य अपने क्षेत्रों में संपूर्ण संप्रभुता रखते थे इनके द्वारा जारी किये गए अनेक सिक्के प्राप्त हुए है।

मौर्योत्तर कालीन समाज

मौर्योत्तर पूर्व समाज की निरंतरता बनी रही

1. समाज चार वर्णों तथा विभिन्न जातियों में बटा था जैसा की पहले था
2. दास प्रथा विद्यमान थी (मनुस्मृति में चर्चा)
3. शुद्रो की स्थिति दयनीय थी महिलाओं की दयनीय स्थिति
4. वर्णसंकरों की विद्यमानता बढ़ती हुई – [बुद्धकाल – 11, मनुस्मृति – 61]

समाज में कुछ नये प्रवृत्तियों का उदय (नये परिवर्तन विशेषता)

1. विदेशियो का आगमन एवं भारतीय समाज से इनका जुड़ाव
2. समाज में ब्राह्मणो की श्रेष्ठता स्थापित हुई (धर्म + राजनीति दोनो में)
3. वैश्यों एवं शुद्रो का उत्थान
4. नयी जातियों का उद्भव (कायस्थ - याज्ञवल्क्य स्मृति में कायस्थो की चर्चा पहलीबार)
5. कबिलाइयों का वर्ण व्यवस्था में समामेलन किया जाना
6. वर्ण व्यवस्था में तनाव का आना एवं कलियुग के संकट की संकल्पना का आगमन

मौर्योत्तर कालीन समाज की विशेषताए पिछले कालों की परम्परागत समाजिक विशेषताओं जैसी ही थी लेकिन इस काल में कुछ नयी समाजिक विशेषताए स्थापित हुई तथा समाज में नये परिवर्तन हुए जो निम्न है।

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

समाज में ब्रम्हणी श्रेष्ठता मजबूत होना -: इसकाल में ब्रम्हणों को धर्म के साथ -साथ राजनीति में भी श्रेष्ठता प्राप्त हुई पूर्व मे जहा ब्रम्हण केवल दान दक्षिणा यज्ञ पूजा आदि से जुड़े होते थे अब वे शासक बने इसकाल के अनेक राजवंश जैसे शुंग कन्व सातवाहन एवं वकाटक ब्रम्हण थे भार शिव जैसे गणराज्य भी ब्रम्हण थे इसकाल में ब्रम्हणीय क्रियाकलापें जैसे यज्ञ एवं दान दक्षिणा का महत्व पुन: स्थापित हुआ।

वैश्यो तथा शुद्रो का उत्थान -: इसकाल में कृषि व्यापार तथा वाणिज्य मे काफी उन्नति हुई कृषि कर्म से जुड़ने के कारण शुद्रों का उत्थान हुआ इसी प्रकार वैश्यों का भी उत्थान हुआ।

वर्णसंकरों की संख्या में वृद्धि -: इसकाल में अन्तरवर्णीय विवाहों की संख्या में वृद्धि हुई जिससे वर्ण संकरों की संख्या में वृद्धि हुई बुद्धकाल मे जहां ग्यारह (11) वर्णसंकरों की संख्या मिलती है वहीं मनुस्मृति इस काल मे इसकी संख्या 61 बतलाती है।

महिलाओं की स्थिति में गिरावट -: इसकाल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आयी मनु जैसे धर्मशास्त्रकारो ने महिलाओं के लिए वर्ण नियम को और कठोर बना दिया मनु ने महिलाओं को ताउम्र पुरुषों के अधिन घोषित किया बाल विवाह को प्रोत्साहित किया गया सम्पत्ति के अधिकार से महिलाओं को वंचित किया गया

विदेशियों का आगमन एवं भारतीय समाज में उनका समावेशन इसकाल में युनानी शक कुषाण पहलव आदि अनेक विदेशियों का भारत आगमन हुआ इन्होने भारत में अनेक क्षेत्रों में राज्य स्थापित कर लिया प्रारम्भ मे इनसे दूरी बनाते हुए म्लेच्छ कहकर इनकी निन्दा की गई लेकिन जब इन्होने

भारतीय समाज एवं धर्म को लेकर उदारता दिखलाई तब उन्हें वर्ण व्यवस्था में शामिल करा लिया गया मनु ने व्रात्यस्तोम यज्ञ के माध्यम से विदेशियों को पतित क्षत्रिय घोषित करते हुए भारतीय समाज में शामिल किया।

जनजातियों का ब्राह्मणीय समाज में समामेलन -: इस काल में अनेक कबीलों जनजातियों का वर्ण व्यवस्था में समामेलन हुआ इस काल में ब्राह्मणों को सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भूमि अनुदान प्राप्त हुए ब्राह्मण पुजारियों द्वारा कबिलाइयों को कृषि कर्म से जोड़ा गया तथा उनको वर्ण व्यवस्था में स्थान दिया गया उनके धार्मिक रीति-रिवाजों को हिन्दू धर्म में स्थान दिया गया।

वर्णव्यवस्था में तनाव एवं कलियुग के संकट की अवधारणा का उदय -: इस काल में भारत में विदेशियों के आगमन से वर्ण व्यवस्था में उन्हें कहा रखा जाय इस बातपर मतभेद उभरे इसकाल में शूद्रो तथा वैश्यो द्वारा अनेक स्थानों पर कर देने तथा बेगारी करने से मना किया गया वर्णव्यवस्था के जो सैद्धान्तिक नियम बने थे जिससे उनकी अवहेलना हुई सामाजिक तनाव उत्पन्न हुए वर्णव्यवस्था के परम्परागत नियमों को टूटता हुआ देखकर इस काल में मनु जैसे व्यवस्थाकारों ने इसे कलयुग के संकट का नाम दिया पहली बार ब्राह्मण धर्म में चार युग (सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग) की कल्पना स्थापित हुई।

प्राचीन भारत
मौर्योत्तर कालीन अर्थव्यवस्था

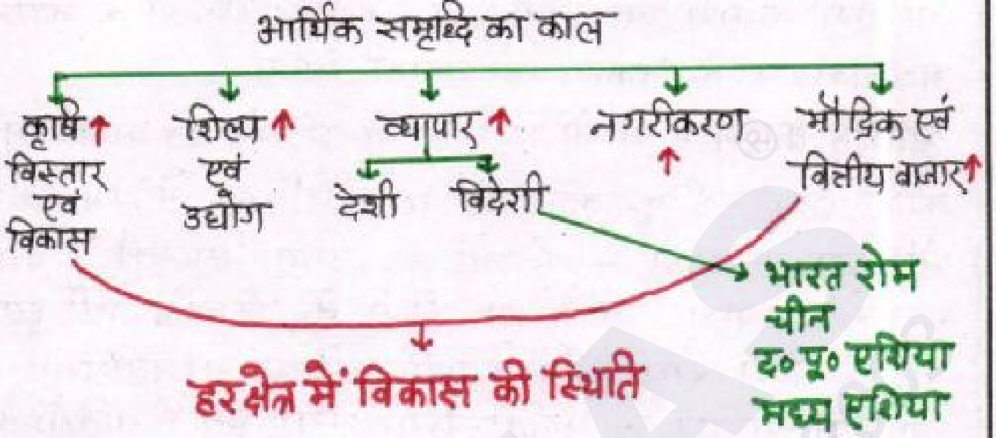

मौर्योत्तर काल आर्थिक विकास एवं समृद्धि का काल था इस काल मे भारत के कृषि व्यापार वाणिज्य नगरीकरण आदि सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

आर्थिक प्रगति एवं विकास में आये उछाल के कारण

आर्थिक उछाल के पीछे अनेक कारको की महत्वपूर्ण भूमिका थी जैसे -

राजनीतिक कारण - इसकाल में देशी तथा विदेशी अनेक राज्यों का उद्भव हुआ सभी राज्यों द्वारा व्यापार एवं आर्थिक विकास के अनुकूल अनेक प्रकार सेसहायता दी गयी इसकाल में श्रेणियों को काफी स्वायत्तता प्राप्त थी राज्य द्वारा चुंगी एवं ब्याज दरों को काफी उदार बनाया गया लगभग सभी राज्यों ने अनेक प्रकार के सिक्के जारी किए सड़कों का विकास कराया कानून व्यवस्था को मजबूत बनाया गया इन सभी स्थितियों के कारण अर्थव्यवस्था के विकास को काफी बढ़ावा मिला।

सामाजिक कारण - किसी भी समाज मे जब मेलजोल की स्थिति हो शान्ती हो समाज आपसी सहयोग में विश्वास करता हो तो यह स्थिति आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देती है मौर्योत्तर काल में समाज की यही स्थिति थी।

इसकाल में विदेशियों का भारतीय समाज से जुड़ाव हुआ इसीप्रकार विभिन्न जातियों एवं वर्णों के बीच सामाजिक सहयोग कायम हुए अतः इस आत्मसातीकरण के कारण अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा मिला।

आर्थिक कारण - मौर्योत्तर काल में शिल्पो की संख्या में काफी वृद्धि हुई बुद्धकाल में 18 मौर्यकाल में 24 जबकि मौर्योत्तर काल में 75 शिल्पों की सूचना मिलती है इस काल में पहलीबार सोने एवं शिशे के सिक्के जारी हुए शासको द्वारा रोम दक्षिणी पूर्वी एशिया मध्यएशिया आदि से व्यापार को बढ़ावा दिया गया इन स्थितियों के कारण भी आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा मिला

अर्थव्यवस्था का क्षेत्रीय अध्ययन

कृषि — कृषि में काफी विकास
- → विभिन्न फसलों की खेती में वृद्धि
  - ↳ धान जौ गेहू कपास गन्ना मसाले आदि
- → कृषि का विस्तार
- ↳ साहित्य मे कृषक कुटुम्बी जीवन एवं कृषि कर्म को बढ़ावा देने की वकालत की गयी

कारण

1- सिंचाई के साधनों का विस्तार
  - ↳ कुआ जलाशय तालाब झील का निर्माण → राज्य द्वारा / आमलोगों द्वारा

2- भूमि अनुदान एवं कृषि का विकास
  - ↳ सातवाहन → बौद्ध / ब्राह्मण → को पहलीबार भूमि अनुदान दिया गया
  - ↳ कुषाण → अक्षनीविदान (स्थायी वंशानुगत दान)

3- भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व को विशेष मान्यता दिया जाना
  - ↳ मनु → हिरण उसकी है जो पहले तीर चलाये
    - → भूमि उसकी है जो पहले उसे जोते बोये
    - → व्यक्तिगत स्तर पर कृषि कार्य के बढ़ावा मिला

4- लौहे के उपकरणों का कृषि में अधिक से अधिक प्रयोग कियाजाना
तक्षशिला पेशावर मथुरा करीमनगर आदि स्थलो से इस काल के लोहे के हल कुदाल कुठार हसियाँ अधिक संख्या में प्राप्त हुए है।

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

भूमि स्वामित्व (Land Ownership)

मौर्योत्तर काल / प्राचीन भारत

बहस

West Historian thinker

- प्राचीन भारत में भूमि पर व्यक्तिगत (Private) अधिकार नहीं था
- भूमि का मालिक राजा प्रजा से अधिकर वसूलते थे एवं शोषण करते थे

Neutral Observation

- भारत में तीन प्रकार के भू-स्वामित्व थे

① व्यक्तिगत भू-स्वामित्व Ex मनु, गुप्त अभिलेख - राज्य द्वारा भूमि अनुदान दिये जाने के लिए भूमि खरीद की चर्चा

② राजकीय स्वामित्व (सीताभूमि) सैद्धान्तिक तौर पर राजा को भूमि पर अंतिम अधिकार प्राप्त था विभिन्न खाली एवं परती भूमि पर राज्य का अधिकार होता था यही कारण है कि राज्य द्वारा भूमि अनुदान किया गया — सातवाहन, गुप्त, गुप्तोत्तर

③ सामुदायिक स्वामित्व – जलाशय, चारागाह, वनसम्पदा, वन क्षेत्र आदि पर ग्रामीण समुदाय का सामूहिक अधिकार होता था Ex- पल्लव + चोल सभाएँ

शिल्प वाणिज्य उद्योग

→ अनेक प्रकार के वस्तुओं का उत्पादन होता था पिछले कालों की अपेक्षा इस काल में उद्योगों एवं व्यवसायों की संख्या में वृद्धि हुई बुद्धकाल में 18, मौर्यकाल 24, मौर्योत्तर 75 (मिलिन्दपन्हो)

→ धातु का व्यवसाय सोना चाँदी ताबा टीन लोहा (सेमीस्टील का उत्पादन जिसपर जंग नहीं लगता था) पेरीप्लस - भारत निर्मित ऐसे लोहे की तलवारों की चर्चा मिलती है जिनका आफ्रिका में निर्यात होता था

वस्त्र उद्योग काफी अच्छी स्थिति में दिखता है (सूती + रेशमी) अनेक केंद्र विशिष्ट वस्त्रो के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध थे

- बनारस (रेशमी वस्त्र)
- मथुरा (शाटक सूती)
- अरिकामेडू (सूती)
- प्रतिष्ठान (सूती)

अन्य व्यवसाय - गंधिक बढ़ई कुम्भकार आदि की चर्चा मिलती है।
हाँथी दात की बनी वस्तुए भारतीय काफी बेहतर बनाते थे जिनकी दुनियभर में मांग थी

श्रेणी संगठन (Guilds)

निगमित (संगठित आर्थिक प्रणाली जिसमे उत्पादन व्यापार ऋण लेनदेन माल ढुलाई आदि कार्य संगठित समूहो द्वारा किया जाता था

ज्येष्ठक (भण्डागारिक)
↓
समूह

- शिल्पी — उत्पादक वर्ग
- महाजन — ऋण लेनदेन निवेशक
- सार्थवाह — मालढुलाई कारवां व्यापार
- वणिपका — व्यापारी

श्रेणी व्यवस्था Top पर

बुद्धकाल → मौर्यकाल → मौर्योत्तरकाल → गुप्तकाल → गुप्तोत्तरकाल

श्रेणियों के कार्य एवं भूमिका

प्राचिन भारत श्रेणियों द्वारा अनेक भूमिकाये निभाई जाती थी इनके कार्य काफी व्यापक थे

राजनीतिक
- श्रेणी अपनी सुरक्षा का बन्दोबस्त
- राज्य द्वारा स्वायत्तता प्राप्त, निजी कानून होता था

आर्थिक
- उत्पादन
- मालढुलाई
- वित्तिय लेन देन
- बिक्री

सामाजिक सांस्कृतिक
- कला को विकास एवं संरक्षण भरहुत साची के स्तूपो के कई भाग श्रेणियों के दान द्वारा बनाये गये -
- गुप्तकालीन अभिलेख मन्दसौर इसमे श्रेणी द्वारा मंदिर बनाये जाने की सूचना
- बौद्ध धर्म को दान दिये जाने की सूचना

मौर्योत्तर कालीन व्यापार

व्यापार में काफी समृद्धि आयी विकास हुआ

आन्तरिक व्यापार
देश भर में चलायमान

विदेशी व्यापार
समुद्रपारीय व्यापार

- भारत रोम व्यापार
- भारत, मध्य एशिया व्यापार
- भारत, द० पूर्वी एशिया व्यापार
- भारत चीन व्यापार

व्यापार के विकास का कारण

- राजनीतिक कारण
- आर्थिक कारण (श्रेणी की भूमिका)
- भौगोलिक कारण (मानसून)
- सामाजिक कारण शान्ती स्थायित्व, आत्मसातीकरण

मौर्योत्तर काल में व्यापार का अभूतपूर्व विकास हुआ यह विकास आन्तरिक तथा बाह्य दोनों में दिखाई देता है व्यापार के विकास की यह सूचना मिलिन्दपन्हो, जातक कथाओं, संगम साहित्य यूनानी रोमन लेखकों (प्लीनि, स्ट्रैबो, पेरीप्लस आदि) के विवरण सिक्को अभिलेखों आदि से प्राप्त होती है।

आन्तरिक व्यापार

• इसकाल में देश के विभिन्न भाग में अनेक उत्पादन केंद्र काफी सक्रीय थे जिसमें बनारस मथुरा तथा तक्षशिला प्रतिष्ठान अरिकामेडू मदुरै आदि मुख्य है विभिन्न नगरों अनेक वस्तुओं के उत्पादन की चर्चा मिलती है जिनमें हाथी दांत की बनी वस्तुएँ मोती रत्न आभूषण नमक तेल सूती एवं रेशमी वस्त्र आदि मुख्य थे -

• इसकाल में विभिन्न नगरों एवं बाजारों को जोड़ने वाले अनेक व्यापारिक मार्ग सक्रीय थे जिनके द्वारा देश के विभिन्न स्थान आपस में जुड़ते थे ये मार्ग निम्न हैं।

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

प्रथम मार्ग → ताम्रलिप्ती → राजगीर → पाटलीपुत्र → मथुरा → तक्षशिला → काबुल (उत्तरापथ मार्ग जो समस्त भारत को जोड़ता था अन्ततः सिल्क रूट से मिल जाता था)

द्वितीय मार्ग → मथुरा → उज्जैन → भड़ौच → सोपारा

तृतीय मार्ग → भड़ौच → नासिक → नागार्जुनकोण्डा → अरिकामेडू

चतुर्थ मार्ग → मालाबार तट → अजन्ता → अरिकामेडू

पंचम मार्ग → ताम्रलिप्ती → अरिकामेडू → मदुरै

विदेशी व्यापार

मौर्योत्तर काल में भारत के विदेशी / समुद्रपारीय व्यापार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई भारत का व्यापार रोम मध्य एशिया दक्षिणी पूर्वी एशिया चीन आदि देशों से होता था।

भारत चीन व्यापार :- भारत का चीन से व्यापार मौर्य काल में भी होता था लेकिन मौर्योत्तर काल में इसमें विशेष वृद्धि हुई भारत चीन व्यापार रेशम मार्ग के द्वारा स्थल एवं जल दोनों मार्गों से होता था चीन से चीनी मिट्टी का बर्तन कच्चा रेशम आदि वस्तुए मुख्यतः भारत लायी जाती थी जबकि भारत चीन को सूती वस्त्र मसाले हाथीदान्त की बनी वस्तुए औषधि आदि का निर्यात करता था

भारत दक्षिणी पूर्वी एशिया व्यापार :- भारत का दक्षिणी पूर्वी एशिया के साथ सुव्यवस्थित व्यापारिक सम्पर्क सर्वप्रथम मौर्योत्तर काल में ही प्रारम्भ हुआ संस्कृत साहित्य में स्वर्ण द्वीप (जावा सुमात्रा माली) के साथ भारतीय व्यापारियों के व्यापार करने की सूचना मिलती है दक्षिण पूर्वी एशिया से मसाले खनिज सुगंधित वस्तुए सोना चाँदी आदि भारत आती थी जबकी भारत हाथीदात की बनी वस्तुए सूती की बनीवस्तुए, औषधी एवं जड़ी बूटी का निर्यात करता था

भारत रोम व्यापार

भारत रोम व्यापार के साक्ष्य -: मौर्योत्तर काल में भारत रोम व्यापार के साक्ष्य काफी विविधतापूर्ण है जिसमें देशी विदेशी साहित्य तथा पुरातत्व दोनो शामिल है विदेशी विवरणों में स्ट्रैबो का भूगोल प्लिनी का प्राकृतिक इतिहास तथा पेरीप्लस आफ इरिथ्रियन सी महत्वपूर्ण पुस्तकें है।

स्ट्रैबो प्रतिवर्ष 102 जहाज भारत की ओर जाने की चर्चा करता है इसी प्रकार पेरीप्लस भारत रोम के बीच आयात निर्यात की वस्तुओं व्यापारिक मार्गों बन्दरगाहों की चर्चा करता है संगम साहित्य भी इस विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी देता है। उत्खनन से दोनो देशों के मध्य व्यापार के ऊपर महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती है जैसे रोम के पोम्पई नगर उत्खनन से भारतीय वस्तुओं की प्राप्ति हुयी है इसी प्रकार दक्षिण भारत में अरिकामेडु मुजरिस आदि के खुदाई से रोमन सिक्कें भूमध्य सागरीय मृदभाण्ड रोमन बस्तियो के साक्ष्य मिले है।

भारत रोम व्यापार के विकास के कारण

भौगोलिक कारण -: यूनानी नाविक हिप्पालस द्वारा 45 ईस्वी में मानसूनी हवाओं की खोज एवं व्यापार में सुगमता।

आर्थिक कारण -: भारत में गुणवत्तापूर्ण वस्तुओं का उत्पादन मौद्रिक एवं पूंजी बाजार की बेहतर स्थिति से रोमन व्यापारियों को व्यापार में साहूलियत प्राप्त होना।

राजनीतिक कारण -: भारत के देशी राजाओं जैसे सातवाहन चोल चेर एवं पाण्ड्य शासक तक्षशिला के हिंद यूनानी शक तथा कुषाण शासक तथा समकालीन रोमन सम्राटों (आगस्टस नीरो आदि) द्वारा व्यापार को प्रोत्साहन (स्त्रोतो से व्यापारिक दूत मण्डल भेजे जाने की चर्चा मिलती है।

सामाजिक कारण -: विदेशी व्यापारियों को भारत में सामाजिक समस्याओं का सामना नही करना पड़ा।

भारतीय विदेशियों का स्वागत सम्मान करते थे तथा सहूलियतें प्रदान करते थे विदेशियों ने भी भारत से जुड़ाव कायम किए इससे व्यापार को बढावा मिला।

भारत रोम व्यापारिक मार्ग

स्थलीय मार्ग -: यह चीन के तकला मकान क्षेत्र के लोयांग - चानयांग से देनहांग तक आता था यहा से दो मार्ग निकलते थे जिसमें एक तुसफान - काराशहर - कुचा होते होते हुए काशगर पहुचता था दुसरा मार्ग देन हांग से खोतान होते हुए काशगर मे मिल जाता था काशगर से हिंदुकुश होते हुए यह मार्ग बल्ख ईरान र्की होते हुए भूमध्य सागर तक चला जाता था भारत मे यह मार्ग तक्षशिला काबुल से होते हुए हिन्दुकुश तक जुड़ा था।

जलीय मार्ग - मुख्यत: दो थे -

जलीय मार्ग प्रथम - भड़ौच (भृगुकच्छ) बाराबरिकम, अदन की खाड़ी अरब होते हुए भूमध्यसागर

जलीय मार्ग द्वितीय - अरब की खाड़ी, अदन तट, लालसागर होते हुए अफ्रीका एवं भूमध्य सागर -

भारत रोम आयात - निर्यात

निर्यात - रेशमी एवं सूती वस्त्र मोती मणि हाथी दात की वस्तुए, मसाले (विशेषत: काली मिर्च) कछुए की खोल बंदर तोता मोर आदि

आयात - सोने एवं चॉदी की मुद्राए (बुलियन) तांबा मूगां पुखराज शराब भूमध्य सागरीय मृदभाण्ड इत्र सुरमा संगीत निपुण बालक रोमन बलाएं आदि।

व्यापार संतुलन - भारत से रोम को विलासी वस्तुए अधिक मात्रा में भेजी जाती थी विशेषत: सूती महीन वस्त्र रेशमी वस्त्र तथा मसाले आदि इससे व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में था रोमन लेखक प्लिनी 5 अरब 50 करोड़ सेस्टर्स भारत रोम व्यापार मे घाटे की चर्चा करता है भारत को लाभ इतनी बड़ी मात्रा मे होता था कि रोमन सिनेट में इस व्यापार को बंद करने की माग उठने लगी।

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

रेशम मार्ग एवं व्यापार में इसकी भूमिका

रेशममार्ग प्राचीन विश्व में वह मार्ग था जो एशिया यूरोप अफ्रिका को आपस मे जोड़ता था विश्व व्यापार एवं आपसी सम्पर्क में इस मार्ग विशेष भूमिका थी।

अनेक मार्ग मिलकर रेशम मार्ग का निर्माण करते थे जो स्थल एवं जल दोनो से होकर गुजरता था भारत इस मार्ग के केंद्र में था अत: दुनिया से भारत को जोड़ने में इसमार्ग की अहम भूमिका थी।

स्थलीय रेशम मार्ग

यह प्रसिद्ध रेशम मार्ग था जो चीन के लोयांग/चेंगन से निकलकर मध्यएशिया होते हुए भूमध्यसागर एवं काला सागर की तरफ चला जाता था देनहांग से पश्चिम की तरफ यह दो भागों में बटजाता था एक मार्ग तुराफान काराशहर कुचा होते हुए काशगर पहुचता था तो दुसरा मार्ग देनहांग से खोतान होते हुए पुनः काशगर पहुच जाता था काशगर से हिंदुकुश होते हुए आगे बल्ख (बैक्ट्रिया) ईरान एवं तुर्की होते हुए भूमध्य सागर की ओर चला जाता था काशगर से एक मार्ग काबुल की तरफ आता था जो आगे तक्षशिला होते हुए भारत से जुड़ जाता था।

जलीय मार्ग

यह चीन के कैंटन बन्दरगाह से होकर दक्षिणी पूर्वी एशिया मलक्का जलडमरूमध्य बंगाल की खाड़ी, मालाबार तट अरब सागर होते हुए लाल सागर एवं भूमध्य सागर की ओर चला जाता था भारत के पश्चिमी तट से भृगुकच्छ बारबरिकम् फारस कीखाड़ी अरब तट से पुनः लाल सागर एवं भूमध्य सागर की ओर जुड़ जाता था।

प्रश्न संख्या
Question No.

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

200

मौर्योत्तर काल में आर्थिक समृद्धि एवं विकास के कारण

कारण - अर्थव्यवस्था एवं व्यापार के विकास के पीछे महत्वपूर्ण कारण थे निम्न थे -

राजनीतिक कारण -: मौर्योत्तर कालीन शासकों में चाहे देशी हो या विदेशी शासक सभी के द्वारा व्यापार को काफी बढ़ावा दिया गया सातवाहनों ने यूनानीयो को अपने राज्य मे बसने एवं व्यापार करने की अनुमति दी इसी प्रकार चेरो चोलो तथा पाण्ड्यों ने भी किया रोम के साथ व्यापार को बढ़ावा देने के लिए पाण्ड्य शासकों ने रोम के शासक आगस्टस के दरबार मे एक दूतमण्डल भेजा था इसी प्रकार कुषाणो द्वारा व्यापारियो को संरक्षण एवं सुरक्षा दिया गया कनिष्क ने स्थानीय रेशम मार्ग के तहद होने वाले व्यापार को विशेष रूप से संरक्षण दिया।

आर्थिक कारण -:

- विभिन्न प्रकार के सिक्को का चलना (सोना चांदी तांबा शीशा
- ऋण बाजार / वित्तीय बाजार की स्थिति का अच्छा होना (ब्याज दरों का काफी कम होना) (9-12%)
- भारतीय शिल्पीयो द्वारा विभिन्न शहरों मे गुणवत्ता पूर्ण वस्तुओं (सूती एवं रेशमी वस्त्र, हाथी दांत की वस्तुए काष्ठ की वस्तुए हिरा मोती जवाहरात आदि) का उत्पादन होना

ध्येयIAS® most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this margin)

- व्यापारिक मार्गों की सक्रीयता भारत के भीतर उत्तर एवं दक्षिणा पथ तथा रेशम मार्ग

सामाजिक कारण - इसकाल में भारतीय समाज एक शान्तीपूर्ण समाज का उदाहरण पेश करता है विदेशियों के ~~कारण~~ भारत मे आगमन का विरोध नहीं किया गया बल्कि उनके साथ सहयोग दिखलाते हुए उनके साथ जुड़ाव कायम किया इस काल मे सामाजिक धार्मिक नियमों में लचीलापन लाया गया इससे आपसी सहयोग एवं सौहार्द को बढ़ावा मिला जिससे शान्ती कायम हुई फलतः व्यापार वाणिज्य के विकास को काफी बढ़ावा मिला।

भौगोलिक कारण -
- हिन्द महासागर में भारत के मध्य में अवस्थिति का होना
- मानसूनी हवाओं की खोज

"प्रभाव"

आर्थिक प्रभाव -
- नगरीकरण में वृद्धि
- सामान्य जनता का वित्तिय सामावेशन होना
- भुगतान संतुलन का अनुकूल होना एवं आर्थिक समृद्धि

तकनीकी पर प्रभाव - सिक्को को आहत करने के बजाय ढालकर बनाने की तकनीकी का विकास हुआ लौह उद्योग मे श्रेष्ठ तकनीकी आयी पेरीप्लस में भारत से अफ्रीका में निर्यात में होने वाले लोहे के ऐसी तलवारों की चर्चा है जिस पर जंग नहीं लगता था इस काल मे पर्वत पहाड़ी को काटकर चैत्य एवं विहारो के निर्माण की तकनीकी का काफी बेहतर विस्तार हुआ

सामाजिक प्रभाव - शुद्रो एवं वैश्यो की सामाजिक स्थिति एवं जीवन स्तर में वृद्धि हुई व्यापार के विकास के कारण शुद्रो का श्रम ~~ले~~ द्वारा तथा वैश्यो को व्यापार

वाणिज्य द्वारा अधिक लाभ प्राप्त हुआ भारत की समृद्धि से प्रभावित होकर अनेक विदेशी भारत आये तथा यहाँ के समाज के साथ जुड़कर हमेशा के लिए भारतीय हो गये।

सांस्कृतिक प्रभाव - कला स्थापत्य चित्रकला नृत्य संगीत आदि का भव्य विकास हुआ।

मौर्योत्तर काल एवं नगरीकरण

द्वितीय नगरीकरण का चर्मोत्कर्ष है
(600 BC 500 AD)

↳ पुराने शहरो का विस्तार
↳ नये नगरो का उद्भव

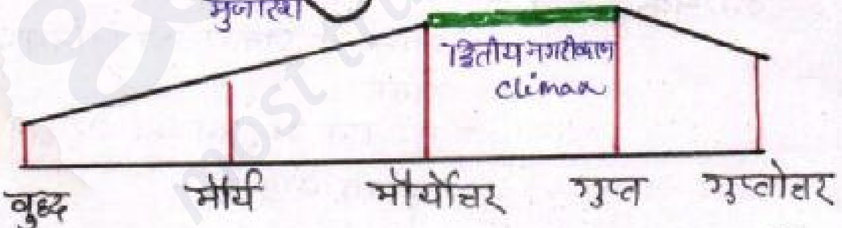

मौर्योत्तर कालीन नगरीकरण की विशेषताएँ

- पुराने नगरों का विस्तार तथा नये नगरीकरण केन्द्रो का उद्भव
- इसकाल में नये उभरने वाले निम्न थे - पेशावर स्यालकोट (~~[illegible]~~ पंजाब) पुन्डरवर्द्धन एवं चन्द्रकेतुगढ़ (पश्चिमबंगाल) शिशुपालगढ़ (उड़ीसा) प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र) अमरावती एवं नागार्जुनकोण्डा (आन्ध्रप्रदेश) कावेरी पत्तनम एवं अरिकामेडु (तमिलनाडु) मुजरीस एवं वनजी (करेल) मदुरै एवं कोरकै (तमिलनाडु)
- इसकाल में पुराने नगरो जैसे तक्षशिला मथुरा कलिंग भृगुकच्छ आदि का और विस्तार हुआ

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

- इसकाल के नगरो के भवन निर्माण योजना में बदलाव आया इसकाल के अनेक नगर हड़प्पावासीयों की भाँति संतरंजनुमा / ग्रीड योजना प्रणाली के आधार पर बनाया गया।
- तक्षशिला के सिरकप एवं सिरमुख टिलो के आधार पर टिलो के उत्खनन से योजना के आधार परनिर्मित नगरीकरण के साक्ष्य मिले है।
- नगरीकरण की तकनीकि मे भी परिवर्तन हुआ चूना एवं सुरखी का इस्तेमाल किया गया इसे कुषाण मध्यएशिया से आये थे इसी प्रकार भवनों मेंरंगीन टाइल्स का भी प्रयोग किया गया।

मौर्योत्तरकालीन धर्म

धर्म एवं दर्शन (विचार) मे भी इस काल में अनेक परिवर्तन हुए लगभग सभी स्थापित धर्मों में पुरानी मान्यताओं एवं विचारों मे संशोधन एवं नये की स्थापना हुयी।

ब्राह्मण धर्म — बौद्धधर्म — जैनधर्म

सभी मे संशोधन, परिवर्तन, परिमार्जन

ब्राह्मण धर्म- इसवी सन शताब्दियों में ब्राह्मण धर्म में उदार मूल्यों की स्थापना हुई तथा इसने नयी विशेषताए उभरी जो पूर्व में नही थी जैसे -

1- ब्राह्मण धर्म मे भी महायान भक्ति की भाँति भक्ति का उद्भव हुआ जिसके तहद माना गया कि ईश्वर की सर्वोच्च कृपा एवं मुक्ती के लिए यज्ञ पशुबलि एवं कर्मकाण्ड आवश्यक नही है बल्कि ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण / आत्मनिवेदन से ईश्वर की कृपा प्राप्त की जा सकती है।

हालाकि ब्राहमण धर्म में अभी यज्ञ कर्मकाण्ड बने रहे लेकिन भक्ति का विचार अधिक लोकप्रिय बनकर उभरा।

- ब्रहमण धर्म मे देवी देवताओ की मूर्ति की पूजा पहली बार प्रारम्भ हुआ देवी देवताओं को शिल्पीयों द्वारा प्रतिमाओं मे उतारा गया जिसमे शिव कार्तिकेय विष्णु पार्वती दुर्गा आदि मुख्य थे।
- ब्राहमण धर्म मे विष्णु की पूजा विशेष रूप से लोकप्रिय बनी इसकाल मे देश के विभिन्न भागो मे विष्णु के अनुयायियो की संख्या मे काफी वृद्धि हुई इन अनुयायियों को ~~वैष्व~~ वैष्णव एवं भागवत कहा गया शुद्रों के देवता नारायण तथा वैदिक देवता विष्णु दोनो का ब्रहमण धर्म मे एकीकरण कर दिया गया इससे विष्णु के पूजा के लोकप्रियता को काफी बढ़ावा मिला यहाँ तक विदेशियो ने भी इन्हे बड़े पैमाने पर अपनाया जिसकी सूचना हेलियोडोरस के विदिशालेख तथा कुषाणों के लेखों से मिलती है मथुरा क्षेत्र में विष्णु के पुजा पंचवृष्टि (Five Heros) के रूप में लोकप्रिय हुई।
- ब्रहमण धर्म में इसीकाल से तीर्थ एवं उपवास को धर्म का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाने लगा मूर्ति पूजा के साथ साथ लिंगपूजा जानवरों की पूजा वृक्षपूजा नागपूजा आदि प्रचलित हुआ

ब्राहमण धर्म मे शुद्रों एवं महिलाओं को अधिकार प्रदान किये गये उन्हे भी देवी देवताओं के पौराणिक कथाओं को सुनने का अधिकार दिया गया

- ईस्वी सन शताब्दि

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

बौद्ध धर्म

ईस्वी सन् शताब्दियों में बौद्ध धर्म में भी अनेकानेक परिवर्तन हुए बुद्ध के अनुयायियों द्वारा इस काल में उनकी मूल शिक्षाओं में अनेक परिवर्तन लाया गया इस काल के बौद्ध धर्म की मुख्य विशेषता निम्न है।

- महायान शाखा का उद्भव एवं बुद्ध को ईश्वर का दर्जा दिया जाना एवं बुद्ध की मूर्ति पूजा का प्रारम्भ
- बोधिसत्व की संकल्पना का उद्भव
- बौद्ध दर्शन में शून्यवाद एवं विज्ञानवाद जैसे सिद्धान्तों की स्थापना
- बौद्ध धर्म का हिनयान एवं महायान मे विभाजन

हिनयान एवं महायान में अन्तर

कनिष्क के संरक्षण में कश्मीर के कुण्डर में चौथी बौद्ध संगीति हुई जिसमें बौद्ध धर्म का हिनयान एवं महायान नामक दो साम्प्रदायों मे विभाजन हो गया दोनो समुदायो के अनुयायी बुद्ध एवं बौद्ध धर्म मे आस्था रखते थे लेकिन दोनो के सिद्धान्तों एवं तरीको मे एक दुसरे से अनेक अन्तर था

हीनयान	महायान
1- इसमे बुद्ध को ईश्वर न मान कर केवल महापुरुष के रूप में माना गया है।	1- इसमें बुद्ध को ईश्वर का दर्जा दिया गया है।
2- इसमे बुद्ध को मूर्ति के द्वारा नही बल्कि विविध प्रतिकों जैसे हाथी और कमल पुष्प घोड़ा चक्र स्तूप आदि के रूप द्वारा याद करने के तरीके को अपनाया गया	2- इसके तहद बुद्ध को ईश्वर मानते हुए गांधार मथुरा अमरावती जैसे स्थानोपर विविध मुद्राओं में उनकी प्रतिमाएं बनाई गई तथा बुद्ध की पूजा के लिए कई नियम एवं तरीके को गढ़ा गया

3- इसमे व्यक्तिगत मुक्ती पर जोर दिया गया है जिसे अरहन्त कहा गया इसमे सामूहिक हित पर व्यक्ति हित को महत्व दिया गया

4- इसमे बुद्ध को किसी भी पुर्नजन्म को स्वीकार नही किया गया

5- इसमे प्रचार का माध्यम पाली भाषा को ही बनाया गया

6 इसमें सर्वास्तिवादिन स्थिरवादिन आदि अनेक उपसंप्रदायो का विकास हुआ

7 इसका प्रसार मुख्यतः श्रीलंका बर्मा तथा दक्षिणी पूर्वी एशिया आदि देशों में हुआ

3- इसमे सामूहिक हित को प्रमुख स्थान दिया गया जिसके लिए बोधिसत्व के आदर्श को प्रमुखता दी गई

4- इसमे माना गया कि बुद्ध का पुर्नजन्म होगा क्योंकि संसार में अभी कष्ट है फलतः भविष्य के बुद्ध की संकल्पना दी गई।

5 इसमे पाली के अपेक्षा संस्कृत को अधिक महत्व दिया गया

6 इसमें माध्यमिक शून्यवाद योगाचार विज्ञानवाद तथा बाद में वज्रयान एवं कालचक्रयान जैसे महत्वपूर्ण सम्प्रदाय उभरे

7- इसका व्यापक प्रसार हुआ जो मध्य एशिया तिब्बत चीन जापान कोरिया आदि देशो मे दिखाई देता है।

जैनधर्म

ब्राह्मण एवं बौद्ध धर्म की भाँति जैन धर्म मे भी सिद्दान्तों का एवं आदर्शों में अनेक नवीन परिवर्तन हुए जैन धर्म में के भी तीर्थंकरों की पूजा प्रारम्भ हुई जैनियो ने अपने तीर्थंकरो को ईश्वर से भी ऊँचा दर्जा देते हुए उन्हे सर्वोच्च माना जैसे जैन धर्म में मानव सेवा के भाव का उदय हुए फलतः कई जैन सेवा दल उभरे इसकाल में कलिंग मथुरा मैसूर आदि जैन धर्म के महान केन्द्र थे।

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

मौर्योत्तर कालीन कला एवं स्थापत्य

मौर्योत्तर काल में कला में अनेक नवीन रूपों शैलियों नवीन संरचनाओं का भव्य विकास हुआ।

स्थापत्य कला	मूर्तिकला	चित्रकला	संगीत, नृत्य, नाटक
स्तूप चैत्य एवं विहार मंदिर (1 बार)	मूर्तिकला के तीन महान केंद्र उभरे	अजन्ता चित्रकला	भरतमुनि का नाट्यशास्त्र

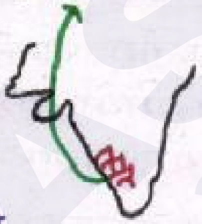

मौर्योत्तर काल में विविध कला शैलियों एवं रूपो के भव्य विकास के लिए जाना जाता है इस काल में अखिल भारतीय स्तर पर स्थापत्य के विविध रूपों (स्तूप चैत्य विहार मंदिर आदि) विविध प्रकार के मूर्तियो चित्रकला संगीत नृत्य नाटक आदि कलाओं का भव्य विकास हुआ

कलाओ के विकास का कारण

आर्थिक कारण - मौर्योत्तर काल मे कृषि व्यापार वाणिज्य नगरीकरण आदि में अभूतपूर्व प्रगति हुई इससे किसानों शिल्पीयों उत्पादको व्यापारियो आदि को काफी आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ इस लाभ का निवेश विभिन्न कलाकृतियों के निर्माण मे किया गया जिससे कलाओं के विकास को बल मिला।

धार्मिक कारण - मौर्योत्तर काल में धर्म दर्शन के क्षेत्र में भक्ति नामक नयी विचारधारा का उद्भव हुआ जिसके तहत माना गया कि ईश्वर की कृपा एवं मोक्ष के लिए

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

हृदय से पूर्ण समर्थन खिलाते हुए इसे प्राप्त किया जा सकता है। भक्ति के लिए देवी देवताओं की प्रतिमा निर्माण की जरूरत महसूस की गयी आगे मूर्ति निर्माण को बल मिला पुनः देवताओं के लिए आश्रय की आवश्यकता ने इसी काल में मंदिर निर्माण को संभव बनाया।

सामाजिक कारण - मौर्योत्तर काल सामाजिक आत्मसातीकरण का काल था इस काल में अनेक विदेशी भारत आये तथा भारतीय समाज एवं संस्कृति से निकट से जुड़ने लगे विदेशियो द्वारा भी अनेक कलाओं के विकास को सहयोग दिया गया भारत के देशी समाज द्वारा इस काल में कलाओं के विकास के लिए बड़ी मात्रा में सामूहिक दान दिया गया इससे कलाओं के विकास को काफी बल मिला।

राजनीतिक कारण - कलाओं के विकास में शासकों ने भी योगदान दिया देशी एवं विदेशी सभी शासकों ने कलाओं को अपना संरक्षण एवं सहयोग दिया इसी प्रकार गंधार तथा मथुरा कला को यूनानियों एवं कुषाणो ने संरक्षण दिया इसी प्रकार साँची एवं भरहुत के स्तूपों के विकास में शुंगो ने काफी सहयोग दिया उड़ीसा के उदयगीरी एवं खण्डगिरी के पहाड़ियो पर खारवेल द्वारा 35 गुफाओ का निर्माण करवायी गयी पश्चिमी घाट के पहाड़ियों में सातवाहनों के संरक्षण में भाजा, जुन्नार, नाशिक कार्ले तथा अजन्ता आदि की पहाड़ियों में अनेक चैत्य एवं विहार बनवाये गये तथा चित्रकारिया की गई।

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न संख्या
Question No.

206

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

स्थापत्य कला

मौर्योत्तर काल में स्तूपों का भव्य विकास हुआ शुंगो के संरक्षण में साँची एवं भरहुत के पुराने स्तूपो को और विस्तार दिया गया जबकि अमरावती नागार्जुनकोण्डा मोहनजोदड़ो पेशावर आदि में अनेक नये स्तूप बनवाये गये स्तूपों विभिन्न अंग प्रत्यंगो जैसे तोरण द्वारों एवं वेदिकाओं पर हीनयानी तथा महायानी परम्परा में अनेक कलात्मक शिल्प भी बनाये गये साथ ही आम लोगो के जीवन से संबंधित विभिन्न विषयों जैसे यक्ष यक्षिणी प्रतिमाएं, नाग गन्धर्व, अप्सरा, पुष्प लता, वल्लरि आदि के शिल्प तथा जातक कहानियों के शिल्प भी बनाये गये हैं इस प्रकार इस काल में बने स्तूप स्थापत्य एवं शिल्प कला का अद्भुत उदाहरण है।

स्तूप स्थापत्य

- अर्थ एवं बनावट
- स्तूपों के प्रकार
- उद्भव एवं विकास
- दर्शन कला एवं अन्य पक्ष

Climax

- मौर्यपूर्व काल
- अशोक (मौर्य)
- मौर्योत्तर काल
- गुप्त
- गुप्तोत्तर

स्तूप का शाब्दिक अर्थ थूप. थूहा या ढेर होता है स्तूप समाधि का प्रतिक स्थापत्य संरचना होते हैं जो किसी सन्त या आचार्य के मृत्यु के स्मृति में बनाये जाते थे

स्तूप विभिन्न अंग प्रत्यंगो से मिलकर बना एक स्थापत्य है इसका मुख्य भाग अण्ड कहलाता है जो उल्टे कटोरे की भाँति या अर्द्धगोलाकार संरचना होती है।

ध्येयIAS
most trusted since 2003

अण्ड के ऊपर आड़े तीरछे पत्थरों की एक संरचना होती है जिसे हर्मिका कहा जाता है स्तूपों के चारो तरफ आड़े तिरछे पत्थरो का एक घेरा बना होता है जिसे वेदिका कहा जाता है। वेदिका तथा अण्ड के बीच में खाली स्थान का प्रयोग प्रदक्षिणापथ के रूप मे किया जाता है चारों दिशाओं मे चार प्रवेश द्वार बने होते है जिन्हे तोरण द्वारकहा जाता है।

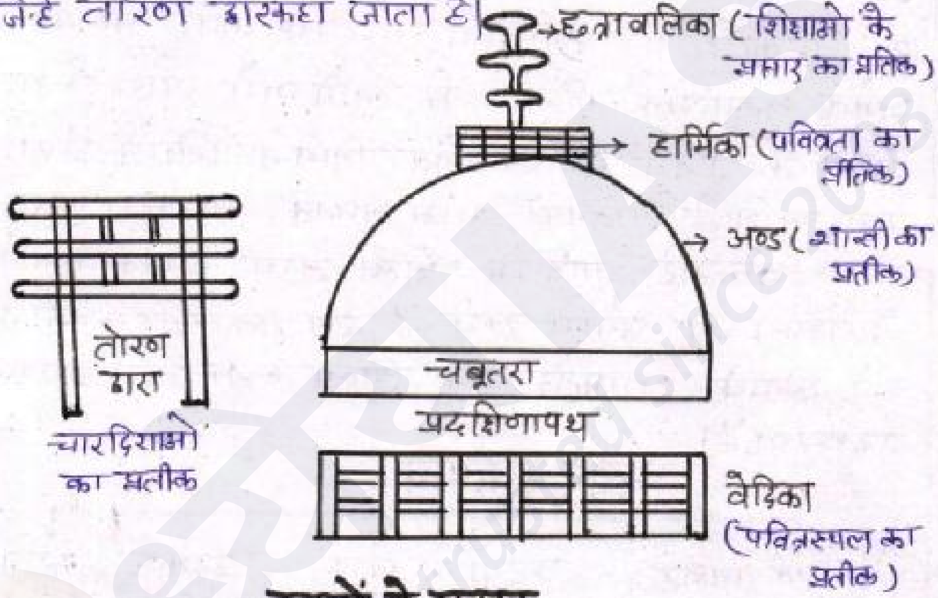

स्तूपों के प्रकार

स्तूप मुख्यतः चार प्रकार के बनाये जाते थे जैसे

शारीरिक स्तूप - यह शारीरिक अवशेषों (पूरा शरीर, नाखुन बाल आदि) पर बनाये जाते थे।

परिभोगिक स्तूप - बुद्द के द्वारा उपयोग की गयी वस्तुओं पर बना स्तूप।

उद्देशिका स्तूप - बौद्द धर्म के प्रचार के उद्देश्य से बना

पूजार्थक स्तूप - बुद्द की पूजा के उद्देश्य से बना स्तूप

स्तूपो का उद्भव एवं विकास

स्तूप की प्रथम चर्चा ऋग्वेद मे आयी है जहाँ ऊची उठी हुयी तीन अभिव्यक्तियों (सूर्य की रश्मियाँ, अग्नि के लपटे - वितान लेकर फैला वृक्ष) को स्तूप कहा गया है लेकिन स्तूपों का निर्माण मुख्यतः बौद्द परम्परा के तहद हुआ

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

महापरिनिर्वाणसूत से जानकारी प्राप्त होती है कि बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों द्वारा आठ स्थानो पर स्तूप बनवाये गये जिन्हे अठमहास्थानी कहा जाता है यह प्रारम्भिक स्तूप थे जो काफी साधारण थे केवल मिट्टी के टेर के रूप में बने थे वर्तमान में यह नष्ट प्राय हो चुके है।

मौर्यकाल मे काफी बड़ी संख्या में स्तूप बनवाये गये बौद्ध परम्परा के अनुसार अशोक ने 84000 स्तूपो का निर्माण करवाया था साँची भरहुत धर्मराजिका (तक्षशिला) चौखण्डी आदि महत्वपूर्ण स्तूप अशोक ने ही बनवाये थे अशोक के समय स्तूपो पर ईट बिछाई गई लेकिन अभी भी इनका भव्य विकास नही हुआ था।

मौर्योत्तर काल में विशाल भव्य तथा कलात्मक अत्यन्त खुबसूरत स्तूपों का निर्माण किया गया इसके पूर्व तथा इसके बाद इतने बेहतर स्तूप नही बने इसकाल मे शुंगो के संरक्षण साँची एवं भरहुत के स्तूपों को और बड़ा बनाया गया तथा उनके तोरण द्वारो एवं वेदिकाओं पर हीनयानी परम्परा जातक कथाओं का ग्रामविषयों एवं लोकजीवन के विषयों आदि के अत्यन्त सातवाहनो के संरक्षण में अमरावती नागार्जुनकोण्डा घण्टशाला में तथा कुषाणों के संरक्षण में पेशावर तक्षशिला मोहनजोदड़ो आदि स्थानो पर भी अनेक स्तूपो का निर्माण हुआ।

गुप्त गुप्तोत्तर काल में भी स्तूप निर्माण की परम्परा जारी रही लेकिन इसकी कलात्मकता में गिरावट आने लगी गुप्तकाल में धमेख स्तूप (सारनाथ) बनाये गये पूर्वमध्यकाल में स्तूपो का निर्माण नही हुआ अत: धीरे धीरे यह कला परम्परा कमजोर हो गयी।

मंदिर

" मौर्योत्तर कालीन कला "

कला के अनेक रूपों /शैलियों का अद्‌भुत विकास

- स्थापत्य कला
  - स्तूप
  - मंदिर
  - चैत्य बिहार
- मूर्तिकला
  - गांधार
  - मथुरा
  - अमरावती
- चित्रकला

कारण
- राजनीतिक कारण
- सामाजिक कारण
- आर्थिक कारण
- धार्मिक कारण

मंदिरों की नींव भारत में पहली बार मौर्योत्तर काल में ही रखी गयी इसकाल के बने मंदिर घास फूस बाँस बल्ली तथा कच्ची ईंटों के प्रयोग से बनाए गये थे प्रारम्भिक मंदिर होने के कारण ये काफी साधारण प्रकार के मंदिर हैं इसकाल के प्रमुख मंदिर निम्न हैं।

1- तक्षशिला का जंडियाल मंदिर
2- नागार्जुनकोण्डा का मंदिर (आन्ध्रप्रदेश)
3- नागरी मंदिर (राजस्थान)
4- बेसर नगर का मंदिर (विदिशा M.P)

} ये सभी ईंटों से निर्मित

चैत्य एव विहार

- चैत्य → पूजा के लिए बनी संरचना
- विहार → निवास स्थान (भिक्षु भिक्षुणी)

चैत्य का शाब्दिक अर्थ - **चिता** चैत्य मृत्यु का प्रतीक समाधि युक्त संरचना होते थे जिनकी पूजा की जाती थी ex स्तूप

चैत्य दो प्रकार के बनते थे
- संरचनात्मक चैत्य
- शैल्यकृत चैत्य (Rock Cut)

संरचनात्मक चैत्य

खुले में घास फूस बास बल्ली आदि से झोपड़ीनुमा की आकृति जो समाधि की ऊपर बनायी जाती थी

शैल्पकृत चैत्य

पहाड़ी को सामने की तरफ से काटकर बनाया जाता था जिसमें अन्तिम सिरा अर्द्ध वृत्ताकार (गज पृष्ठाकार) होता था किनारे पर स्तूप बना होता था प्रवेश द्वार कीर्तिमुख व खिड़की बनी होती थी।

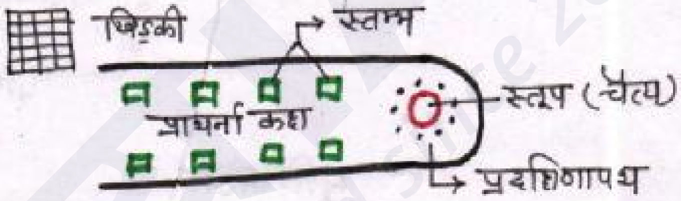

मौर्योत्तर काल में पश्चिमी तट पर अनेक चैत्य एवं विहार तथा पूर्वी तट पर अनेक विहारो का निर्माण हुआ।

उदयगिरि - खण्डगिरि
↳ खारवेल द्वारा 35 गुफाओं विहारो का निर्माण
Ex- हाथीगुम्फा, रानीगुम्फा, आकाश सतभर, पातालपुरी

सहआद्रि
↓
सातवाहनो के संरक्षण में अनेक चैत्य + विहार बने
↳ 1 भाजा
2 कार्ले
3 जुन्नार
4 पीतलखोरा (खीरा)

विहार (संघाराम)

भिक्षु भिक्षुणियों के रहने का का स्थान
यह भी दो प्रकार के बनते थे

संरचनात्मक विहार
↓
खुले धरातल पर घास फूस बास बल्ली से झोपड़ियों का निर्माण

शैल्य कृत विहार
↓
पहाड़ी को काटकर निर्माण जिसमें एक मुख्य खास बरामदा तथा कई कमरे बने होते थे।

मूर्तिकला

- मौर्योत्तर काल में देशभर में भारी संख्या में धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष अद्भुत प्रतिमाओं का निर्माण हुआ
- इतिहास में पहली बार देवी देवताओं का प्रतिमा निर्माण
- इसकाल में मूर्तिकला के तीन महान केंद्रो का उद्भव हुआ

गांधार कला केन्द्र | मथुराकला केन्द्र | अमरावती कला केन्द्र

गांधार कला

मुख्य स्थल-:
- गांधार
- तक्षशिला
- बामियान
- पेशावर
- शाहजी की ढेरी
- स्वात घाटी
- चरसड्डा
- अन्धोर

- यहाँ की मूर्तियों के निर्माण में अनेक सामग्रीयों का प्रयोग किया गया है Ex
  - → शिष्ट पत्थर (ब्लू)
  - → चूनार प्लास्टर
  - → गचकारी
  - → गिलीमिट्टी

- विषय + विशेषता
  - विदेशी → अपोलो + हेलेना
  - देशी → धर्म निरपेक्ष मूर्तियाँ
    - ↳ यक्ष यक्षिणी कुबेर हरीति
    - ↳ सामान्य स्त्री पुरुष
  - → धार्मिक मूर्तियाँ
    - केवल बुद्ध एवं बोधिसत्व

विदेशी प्रभाव से बनी है (यूनानी + रोमन + मध्य एशिया)

यूनानी लक्षण
- दाढ़ी + मूँछ बना है।
- पैरों में सैंडल है।
- बाल घुंघराले हैं।

रोमन लक्षण
- वस्त्र लटके हुए हैं
- आभूषण से लदे हैं
- सादा प्रभामण्डल

" मथुरा कला "

- मथुरा केशवपुर, नमालपुर कटरा और कंकालीटिला आदि स्थानों पर विकसीत
- मुख्यतः लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग प्रतिमा निर्माण के लिए किया गया है

विषय + विशेषता

गांधार की अपेक्षा काफी विविधताएँ

धार्मिक विषय (सभी धर्म)

धर्म निरपेक्ष विषय
- यक्ष यक्षिणी कुबेर हारीति की प्रतिमा
- सामान्य स्त्री पुरुष की प्रतिमा

① हिन्दू धर्म → शिव
कार्तिकेय
दुर्गा पार्वती
सप्तमातृकायें

② जैन धर्म → तीर्थंकरो की मूर्तियाँ

स्वतंत्र + आयागपट्ट दोनो रूपों में बनी है
- आदिनाथ
- पार्श्वनाथ
- महावीर स्वामी

③ बौद्ध धर्म → स्वदेशी प्रभाव से बनी आध्यात्मिक भाव का मूर्तियों में विशेष आरोपण

Ex
- बुद्ध मूर्तियों में दाढ़ी एवं मूंछ नही बनी है।
- पैरों में कोई जुता चप्पल नही दिखाया गया है।
- योगी के भाँति जटा बना है।
- वस्त्र कसे हुए दिखते है
- लम्बा कान, खुबसूरत वदन अलंकृत एवं प्रभामण्डल (दैवीय)

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

"अमरावती कला"

इसका विकास कृष्णा घाटी में अमरावती नागार्जुन कोण्डा गोली घण्टशाला आदि केंद्रों पर हुआ।
मुख्यतः बलुआ पत्थर एवं संगमरमर का प्रयोग यहा प्रतिमा निर्माण में किया गया है।

विषय + विशेषता

- धार्मिक - मुख्यतः बुद्ध एवं बोधिसत्व की प्रतिमाएं बनी हैं।
- धर्म निरपेक्ष - सामान्य स्त्रीपुरुष, राजा, राजकुमारी महलों के दृश्य

धार्मिक की अपेक्षा यहां की गैर धार्मिक मूर्तियां ज्यादा अच्छी बनी हैं।

चित्रकला (Ajanta)

औरंगाबाद कुल 29 गुफाएं हैं जो सैकड़ों वर्षों में बनी हैं।

- सातवाहन
- वाकाटक (गुप्त)
- पश्चिमी चालुक्य

कलाओं का संगम
- चैत्य विहार
- मूर्तियां
- चित्रकारियां

अजन्ता चित्रकला सैकड़ों वर्षों में चित्रकारी की गयी

विषय - विशेषता

धार्मिक (केवल बौद्ध धर्म) → गैर धार्मिक

- हीनयान परम्परा के चित्र
- महायानी परम्परा के चित्र
- जातक कहानियों के चित्र

① प्राकृतिक तरीकों के रंगो का निर्माण → वनस्पति, खनिज → मिश्रण

② लाल, गेरुआ, हरा, काला, पीला, सफेद

③ चित्रों में भाव - संवेदना सौन्दर्य का अद्भुत प्रयोग

प्रश्न संख्या
Question No.

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

" अजन्ता चित्रकला की तकनीकी "

मुख्यतः तीन तरीकों द्वारा चित्र बनाए गये है।

- **फ्रेस्को विधि** or (गीली विधि) or (टेम्परा विधि) → दिवारों पर चूना प्लास्टर का लेप कर सूखने के बाद चित्रण किया गया
- **सिक्को विधि** (सूखी विधि) → दिवारों पर चूना + खड़िया से सीधी पुताई करके चित्रण
- **फ्रेस्को सिक्को** → दोनो का मिश्रण

" प्रदर्शनकारी कलाए संगीत नृत्य नाटक "

इसकाल में संगीत नृत्य एवं नाट्य कला भी काफी समृद्ध थी भरतमुनी इसी काल से संबन्धीत है जिन्होने नाट्य शास्त्र शास्त्र नामक ग्रन्थ की रचना की जिन्होने अपनी पुस्तक में नृत्य संगीत तथा नाटक संबन्धीत अनेक नियमों एवं मानकों का उल्लेख किया है शास्त्रीय कलाओं में आज भी भरतमुनी के निर्देशों का कलाकार पालन करते है।

" मौर्योत्तर काल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी "

मौर्योत्तर काल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण विकास हुआ।

धातु विज्ञान

इस काल में भारतीय लोहे के ऐसे वस्तुओं का निर्माण करते थे जिनपर जंग नही लगता था

Ex पेरीप्लस में भारत से अफ्रीका को निर्यात किये जाने वाले जंग रहीत तलवारों की चर्चा मिलती है।

भवन एवं बांध इंजीनियरिंग

- योजनाबद्ध ढंग से भवनों का निर्माण हुआ सुर्खी चुना एवं टाइलों का प्रयोग
- यूनानी इंजीनियरों की इसमे महत्वपूर्ण भूमिका थी

चिकित्सा विज्ञान

चरक एवं सुश्रुत जैसे महान चिकित्साशास्त्री इसीकाल के है।

- चरक — चरकसंहिता — ज्वर मिर्गी यक्ष्मा (T.B.) का इलाज
- सुश्रुत — सुश्रुतसंहिता — शल्यचिकित्सा पथरी सर्जरी करने वाले सर्जन

"खगोलशास्त्र"

इसकाल में ज्योतिष तथा नक्षत्र विद्या में भी काफी प्रगति हुई यूनानीयों के आने से भारत में रोमन तथा पौलिश सिद्धान्त जैसे सिद्धान्तों का आगमन हुआ नक्षत्रों को देखकर भविष्य बताने की कला भारत में यूनान से ही आयी इसे होराशास्त्र कहा गया है।

क्या मौर्योत्तर काल अन्धकार काल था ?

अन्धकार युग था → Evaluation ← अन्धकार युग नहीं था

मौर्योत्तर काल को अन्धकार युग के रूप में परिभाषित करना कहाँ तक न्यायोचित है आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

आधुनिक इतिहास लेखन के तहद मौर्योत्तर काल को अनेक विद्वानों ने अन्धकार युग के रूप में घोषित किया है जबकि विद्वानों का एक दुसरा वर्ग इस पर आपत्ति करता तथा इसे अन्धकार युग नहीं मानता है अतः यह विवेचन का मुद्दा है।

इतिहासकारों का एक वर्ग मौर्योत्तर काल को अन्धकार युग के रूप मे देखता है इनका तर्क है कि मौर्योत्तर काल राजनीतिक अस्थिरता एवं अशान्ती का काल था इस काल मे भारत पर विदेशियों के आक्रमण हुए जिससे संघर्ष तथा युद्द को बल मिला इसकाल में किसी ऐसी राजनीतिक शक्ति का उदय नही हुआ जो समस्त भारत को एक सूत्र मे पिरो सके तथा एकजुट कर सके साहित्य एवं विज्ञान के क्षेत्र में गुप्तों जैसा कोई विकास नही हुआ इसकाल मे समाज काफी अन्तरविरोधों एवं तनावों से ग्रस्त रहा था

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

विदेशियों के आने से सामाजिक संकट उत्पन्न हुआ जिसे मनु जैसे लेखकों ने कलियुग का संकट नाम दिया है अतः इस युग को अन्धकार युग कहा जाना चाहिए।

विद्वानों का एक दूसरा वर्ग मौर्योत्तर काल को अन्धकार काल के रूप में चिन्हित करने पर कड़ी आपत्ति दर्ज करता है तथा इसे अन्धकार युग नहीं मानता है इनका तर्क है कि यह वह काल था जब कृषि व्यापार वाणिज्य उत्पादन केन्द्रों तथा नगरों का अभूतपूर्व विकास हुआ कला के विविध शैलियों एवं रूप रंगों (स्तूप, चैत्य, विहार, मूर्तिकला, चित्रकला) का भव्य विकास हुआ धातु विज्ञान एवं चिकित्सा विज्ञान (चरक एवं सुश्रुत की उपस्थिति) अत्यन्त उन्नत था इस काल में निचले वर्ण के लोगों अर्थात शूद्रों एवं व्यापारियों के जीवन में उत्थान हुआ विदेशियों के भारत आगमन से भारत की सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था छिन्न भिन्न नहीं हुई क्योंकि उन्होंने भारत को अपना घर बना लिया वे यहां के समाज एवं धर्म का स्थायी हिस्सा बने उनका भारतीयकरण हो गया अतः इस युग को अन्धकार युग कहना युक्तीसंगत नहीं है।

विभिन्न मतों का परीक्षण करने तथा साक्ष्यों के जाँच के बाद कहा जा सकता है कि इस युग को अन्धकार युग कहना उचित नहीं है अन्धकार युग अपने आप में एक अनैतिहासिक संकल्पना है जिसे किसी भी पिछले युग पर लागू कर उसे परिभाषित नहीं किया जा सकता है मौर्योत्तर काल में हुए सामाजिक एवं आर्थिक सांस्कृतिक विकास के परिपेक्ष्य में इस काल को अन्धकार युग कहना ~~न्योचित~~ न्यायोचित नहीं है बल्कि इस काल को परिवर्तन एवं विकास के युग के रूप में देखा जाना चाहिए।

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this margin)

क्योंकि इस समय अनेक पुरानी विशेषताएं निरंतर बनी रही सांस्कृतिक एवं समाज मे नवीन परिवर्तन भी हुए इस समय कुछ ऐसे सांस्कृतिक प्रतिमानों की स्थापना हुई जो वर्तमान में भी हमारे संस्कृति मे बने हुए है।

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

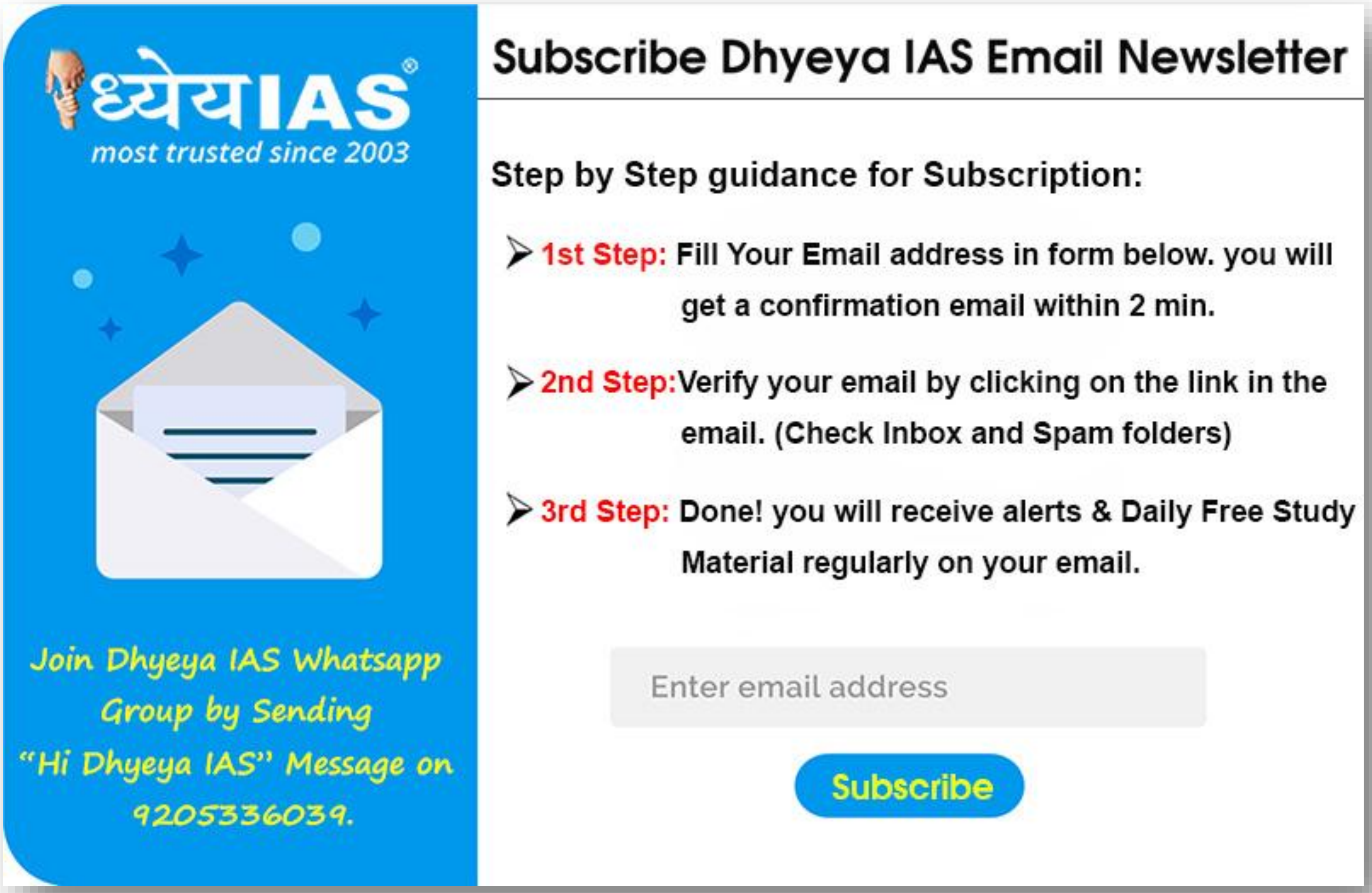

ध्येयIAS
most trusted since 2003
Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर

Dhyeya IAS Now on Whatsapp

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुडने के लिए 9355174442 पर "Hi Dhyeya IAS" लिख कर मैसेज करें

नोट: अगर आपने हमारा Whatsapp नंबर अपने Contact List में Save नहीं किया तो आपको प्रीतिदिन के मैटेरियल की लिंक प्राप्त नहीं होंगी इसलिए नंबर को Save जरूर करें।

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400